भारतीय समाज के विविध आयाम

डॉ0 नम्रता जैन

तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय, मुरादाबाद

भारतीय समाज के विविध आयाम

डॉ नम्रता जैन हिन्दी-समीक्षक, समालोचना एवं संपादन कला में दक्ष डा. नम्रता जैन तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय से संबंद्ध तीर्थंकर आदिनाथ कॉलेज ऑफ एजूकेशन में सहायक प्राध्यापिका के पद पर कार्यरत है आपकी शिक्षा एम.ए.(हिंदी, संस्कृत, योगा) यू.जी.सी. नेट . (हिंदी एवं शिक्षा शास्त्र) एम.एड. पी.एच.डी. (हिंदी) है आपको शिक्षा के क्षेत्र में 16 वर्ष का अनुभव है। आपने अनेक अंतर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय कार्यशालाएं, सेमिनार, वेबीनार आयोजित किये है एवं प्रतिभाग भी किया है। लेखिका के रूप में आपकी 10 से भी अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। साथ ही हिंदी एवं संस्कृत विषय पर प्रतियोगी पुस्तके प्रकाशित हो चुकी है। संपादिका के रूप में आपकी 12 से अधिक पुस्तके संपादित हो चुकी हैं। विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में आपके लेख एवं शोध पत्र प्रकाशित हो चुके है। आप Universe Journal of Education & Humanities में एडिटोरियल बोर्ड मेम्बर भी है। विश्वविद्यालयी स्तर पर भी आप अकादिमक कार्य हेतु अनेक उत्तरदायित्वों का निर्वाहन भी करती है।

डॉ कल्पना जैन तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय से संबंद्ध तीर्थंकर महावीर इंस्टिट्यूट ऑफ मेनेजमेन्ट एंड टेक्नालॉजी (डी.एल.एड.) में प्राचार्या के पद पर कार्यरत हैं। आपकी शिक्षा एम.ए. (हिन्दी एवं राजनीति शास्त्र) एम.एड. एवं दो विषयों पर पी.एच. डी. (शिक्षाशास्त्र एवं दर्शनशास्त्र) है। आपको शिक्षा के क्षेत्र में 30 वर्ष का अनुभव है। लेखिका के रूप में आपकी 3 से भी अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। साथ ही हिंदी एवं संस्कृत विषय पर प्रतियोगी पुस्तके प्रकाशित हो चुकी है। संपादिका के रूप में आपकी 12 से अधिक पुस्तके संपादित हो चुकी हैं। विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में आपके लेख एवं शोध पत्र प्रकाशित हो चुके है । आप Universe Journal of Education & Humanities में एडिटोरियल बोर्ड मेम्बर भी है। विश्वविद्यालयी स्तर पर भी आप अकादिमक कार्य हेतु अनेक उत्तरदायित्वों का निर्वाहन भी करती है। आपने अनेक अंतर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय कार्यशालाएं , सेमिनार, वेबीनार आयोजित किये है एवं प्रतिभाग भी किया है।

डॉ. रत्नेश कुमार जैन तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय से संबंद्ध तीर्थंकर आदिनाथ कॉलेज ऑफ एजूकेशन में प्राचार्य के पद पर कार्यरत हैं। आपकी शिक्षा एम.एस.सी. (वनस्पति शास्त्र, आई.टी.) एम.ए.(अंग्रेजी, योगा) यू.जी.सी. नेट पी.जी.डी.सी.ए. ,एम. एड. ,पी.एच.डी. है। आपको शिक्षा के क्षेत्र में 17 वर्ष का अनुभव है। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में आपके लेख एवं शोधपत्र प्रकाशित हो चुके हैं। आपने अनेक अंर्तराष्ट्रीय एव राष्ट्रीय कार्यशालाये, सेमीनार, बेबीनार आयोजित किये हैं एवं प्रतिभाग भी किया है। सम्पादक के रूप में आपकी 10 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। आप **Universe Journal of Education & Humanities** में एडिटोरियल बोर्ड मेम्बर भी है। विश्वविद्यालयी स्तर पर भी आप अकादिमक कार्य हेतु अनेक उत्तरदायित्वों का निर्वाहन भी करती है। लेखक के रूप में आपकी 6 से भी अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है

मूल्य 995.00 रुपये

जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स

वी -508 गली नं. 17,विजय पार्क,दिल्ली -110053

मो.08527460252,9990236819

ई मेल : jtspublications@gmail.com

ब्रांच ऑफिस: ए-9, नवीन इनक्लेव गाज़ियाबाद, उत्तर प्रदेश, पिन-201102

ISBN 978-93-92611-58-2

9 789392 611582

अनुक्रमणिका

शुभकामना संदेश : डॉ एम्० पी० सिंह 05
शुभकामना संदेश : डॉ० प्रेमा मिश्रा 06
भूमिका : डॉ नम्रता जैन 07
संपादक की कलम से : डॉ नम्रता जैन ,डॉ कल्पना जैन, डॉ रत्नेश कुमार जैन 08

खंड (अ) हिंदी

1. यशपाल के उपन्यास और नारी-जीवन की समस्याएँ: 15
अभिषेक दांगी
2. कबूतरखाना उपन्यास में नारी जीवन का यथार्थ 21
डॉ . षेनुजा मोल. एच . एन
3. 'कतार से कटा घर' कथा-संग्रह में सशक्त नारी भूमिका 28
हेमलता पाल
4. डॉ. भगीरथ बड़ोले के नाटकों में स्त्री विमर्श 34
अंकिता जाटवा
5. भारतीय साहित्य में स्त्री विमर्श 42
दीक्षित कुमार
6. आदिम विश्वास एवं कुप्रथा की कथा : 'डायन' 47
फरीदा खातून
7. प्रेमचंद और स्त्री विमर्श 54
डॉ.उमामीणा
8. भारतीय समाजऔर किन्नर विमर्श :चुनौती एवं उपलब्धियां 61
डॉ. हंसा शुक्ला,प्राचार्य, डॉ. रवीश कुमार सोनी, ए. शशांक राव
9. "किन्नर जीवन : एक दर्द भरी कहानी " 68
प्रा.डॉ. रघुनाथ नामदेव वाकळे
10. तीसरी ताली उपन्यास में किन्नर विमर्श 74
नाजमा हाशमी
11. भारतीय समाज में दिव्यांग विमर्श :छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा संचालित

6

आदिम विश्वास एवं कुप्रथा की कथा : 'डायन'

फरीदा खातून
असिस्टेंट प्रोफेसर
पंचकोट महाविद्यालय
पुरुलिया,पश्चिम बंगाल

अनादि काल से ही सृष्टि आदिम मनुष्य के लिए रहस्यात्मक एवं विचित्र रही है। वह अनेक क्रियाओं और घटनाओं के पीछे के कारणों को नहीं जान पाता था। अज्ञानतावश वह प्रकृति की अनेक घटनाओं के पीछे किसी अदृश्य सत्ता की सर्वशक्तिमत्ता समझता था। वर्षा, बिजली, रोग, भूकंप, बाढ़, अकाल, अनावृष्टि के पीछे देव, भूत-प्रेत और पिशाचों के परिणाम माने जाते थे। ज्यों-ज्यों ज्ञान का प्रकाश हुआ, प्रकृति की रहस्यात्मकता के पट खुलने लगे। विज्ञान ने मनुष्य को तर्क के आधार पर तथ्यों को स्वीकारने का आधार प्रदान किया। दुर्भाग्यवश अन्य संसाधनों की तरह ही शिक्षा भी कुछ विशिष्ट सत्ताधारी लोगों के गिरफ्त में बँध गई। ऐसे में सुदूर वनों में निवास करने वाले आदिम जनजाति विकास की मुख्य धारा में न मिल सके। उन्हें असभ्य एवं बर्बर कहकर उपेक्षित किया जाता रहा है। अब प्रश्न यह उठता है कि ये आदिम जनजाति हैं कौन? डॉ. तुमराम के अनुसार, ''एक विशेष पर्यावरण में रहनेवाला, एक-सी बोली बोलनेवाला, समान जीवन-शैली से सजा, एक से देवी-देवताओं को माननेवाला, समान सांस्कृतिक जीवन-यापन करनेवाला परंतु अक्षरज्ञान रहित मानव समूह यानी आदिवासी -इस प्रकार का अर्थ विविध परिभाषाओं के आधार पर लिया जा सकता है।''[1]

सही अर्थों में अगर देखा जाय तो आदिवासी जातियाँ आर्यों से पूर्व का मनुष्य दल है। आर्यों के आगमन से पहले भारतवर्ष की भूमि पर ये पहले से हीबसी हुई थी। डॉ. रामदयाल मुंडा इस संबंध में लिखते हैं -''आर्य जातियाँ जब भारत भूमि में आईं तो उन्हें तथाकथित अनार्य जातियाँ यहाँ पहले से ही बसी मिलीं और क्योंकि उनके पहले के भारतीय निवासियों का पता अभी नहीं है, उन्हें ही आदिवासी, प्रथम निवासी कहना उपयुक्त होगा।''[2]

ये आदिवासी जातियाँ एक तरह से आर्येतर जातियाँ थीं जिन्हें हजारों बरसों से सभ्यता से दूर रखकर आदिम जीवन जीने को विवश किया जाता रहा है।

20वीं सदी का उतरार्द्ध कई प्रकार के विमर्शों का काल रहा है। संचार साधनों एवं नये तकनीकि विकास ने मनुष्य की सोच में अभूतपूर्व परिवर्तन लाया है। परिणामत: साहित्य में भी नये विमर्शों एवं आंदोलनों की सुगबुगाहट शुरू होने लगी। इस तरह के विमर्शमूलक आंदोलनों ने हाशिए के लोगों को साहित्य के केंद्र में लाकर इन्हें मानवीय अधिकार दिलाने की मुहिम छेड़ी, जिसके फलस्वरूप स्त्री-विमर्श एवं दलित-विमर्श साहित्यिक विमर्श के केंद्र में आया। अभी इन विमर्शों की पृष्ठभूमि तैयार ही हो रही थी कि आदिवासी विमर्श साहित्य के दहलीज पर दस्तक देने लगी अनेक आदिवासी एवं गैर-आदिवासी लेखकों ने अपनी लेखनी द्वारा जनजातियों की दुर्दशा एवं वैषम्यपूर्ण जीवन का अंकन कर शोषक वर्ग के प्रति आक्रोश व्यक्त किया है। स्त्री एवं दलित लेखन की तरह स्वानुभूति एवं सहानुभूति का विवाद उठ खड़ा हुआ। जाहिर है, सहानुभूति के आधारपर लिखा गया साहित्य ऊपरी यथार्थ तक ही सिमटा रहता है परंतु स्वयं झेली गई यंत्रणा और शोषण से सम्बद्ध आदिवासियों द्वारा वर्णित साहित्य अधिक जीवंत एवं भावपूर्ण होगा। फिर भी गैर आदिवासी अनेक कथाकारों ने इनके जीवन-संघर्ष को बहुत करीब से अनुभूत कर उसके जीवंत यथार्थ को अपने लेखन के माध्यम से प्रस्तुत किया है। ऐसे अनेक रचनाकारों में महाश्वेता देवी एक सशक्त रचनाकार के रूप में आती हैं। तथ्यों, सूचनाओं एवं जीवंत चरित्रों की खोज में उन्होंने आदिवासी अंचल को बहुत करीब से देखा और परखा है। अपनी रचनाओं में सीमांत पर पड़े जनजातियों के जीवन में अकाल, सूखा, बेरोजगारी एवं सवर्ण सामंती समाज के शोषण से पीड़ित आदिवासियों की यथार्थ दशा का अपनी रचनाओं में विश्वसनीय ढंग से प्रस्तुत किया है। एक तरह से इनकी रचनाएं अभिजात्य रुचि पर तमाचा है।

'डायन' महाश्वेता देवी की लंबी कहानियों में से एक है, जिसमें अंधविश्वास एवं कुप्रथा के पीछे मनुष्य के आदिम भय एवं उसकी असलियत का पर्दाफाश किया है। आदिम युग से ही मनुष्य अनावृष्टि, अकाल, भूकंप जैसे विनाश से भयभीत होकर प्रकृति के आगे नतमस्तक होता रहा है। ज्ञान-विज्ञान के विकास के साथ मनुष्य का भय कम होता गया परंतु इस ज्ञान-विज्ञान एवं तकनीकि की पहुँच सभ्य सवर्ण समाज तक नहीसीमित रहा। समाज के सीमांत पर सभ्यता से दूर रहने वाले आदिवासियों को शिक्षा एवं उन्नत संसाधनों से वंचित ही रखा गया। फलस्वरूप वह अज्ञान एवं अंधविश्वासों के अंधकार में निरंतर भय एवं संत्रास में जीवन जीने को विवश रहा। 'डाइन' अंचल के उन गांवों की कहानी है जो अकाल से ग्रसित है। जहां अनुमान मिश्र जैसे सशक्त सवर्ण हिंदू ब्राह्मण इनका हर तरह से शोषण करते हैं। अशिक्षित आदिवासियों के मन में भय संचारित कर ये अपना स्वार्थ साधते हैं। कुरुड़ा, मुरहाई एवं हेसाड़ी गांव में चैत के महीने में वर्षा नहीं आषाढ़ के महीने में बादल आते परंतु उड़ जाते। अकाल एवं सूखे के आतंक

से घबड़ाकर इन गांवों के लोग टहाड़ पर हनुमान मिश्र के पास गए। वे उस इलाके के हिंदू ब्राह्मण एवं शैवभक्त संपन्न व्यक्ति थे। वे अकाल के पीछे डाइन का प्रकोप बताते हैं। वे कहते हैं -''देवता ने उन्हें एक भयंकर सपना दिखाया है। 'मैं अकाल हूँ' कहती एक भयानक औरत, नंगी, एक लाल रंग के बादल पर बैठकर उड़ गयी। पंचांग में कहा है कि वह डाकिनी थे। इस डाकिनी को खोज कर भगाना होगा।''[3]

डाइन कुरुड़ा, मुरहाई एवं हेसाड़ी जैसे गांवों को निशना बनाकर उड़ रही है। डाइन का प्रकोप इन गांवों में इसलिए है क्योंकि वे महापापी हैं। वे पाप की व्याख्या करते हुए कहते हैं -''वे महापापी हैं -सारे गंजू-दुसाध-धोबी-ओराँव-मुंडा। अंत के दो दल तो पापियों के पापी हैं। आज अपने असभ्य देइ-देउता, कल मिशनके यीशू, परसों हिंदुओं के देवता। पूजा का कोई विचार नहीं।''[4] अपने पापों के कारण ही वे बार-बार अकाल एवं सूखे में मरते हैं। इस तरह की बातों से हनुमान मिश्र ने भय का एक अशरीरी प्रेत उनके बीच छोड़ दिया जिसके कारण सभी गांव वासी भय से सूखने लगे। इस अज्ञात भय ने उन्हें एक-दूसरे के प्रति सशंकित बना दिया -'सारे पति-बाप-भाई-बेटे औरतों पर नजर रखने को लाचार हो गए। जमीन पर परछाईं पड़ रही है या नहीं, मैदान में मल-मूत्र त्याग करने के बाद जब वापस आते हैं तो साथ में सिर के ऊपर कहीं कौआ उड़ता हुआ आता है या नहीं, रात में बाहर निपटने के बाद कोठरी में आकर जो कुंडी लगाए वह आदमी है या नहीं? इन सब बातों पर कड़ी नजर रखी जाने लगी।''[5]

डर के साये में जीते हुए वह अनावृष्टि एवं अकाल को डाइन का प्रकोप मान भयभीत हो गए। इतना ही नहीं इस डायनी-प्रकोप का मूल एवं एक-दूसरे के पाप की परिणति भी मानते हैं। हनुमान मिश्र के आदेशानुसार वे दूसरे के साथ-साथ स्वयं पर भी संदेह करने लगे। बुधनी कुरुड़ा के जल में बालदार हाथ की छाया देख 'मैं डाइन हूँ' कहकर ऐसे चीखी कि भालू जैसा खतरनाक जानवर उछलकर भाग गए। बिसरा दुसाध अपनी एकमात्र संपत्ति काली बछिया को मार डाला। बाद में अपराध-बोध से ग्रस्त होकर वह फाँसी लगाकर मर जाता है।गांव में बिसरा दुसाध सबसे होशियार था जो अनेक टोटकों की दवाइयों को जानने वाला था। वह गांव के लिए बड़े काम का था। हाँ, गुणी होकर भी वह अन्य गांववासियों की तरह ऋणग्रस्तता से मुक्त नहीं था -''गरीबी के कम्यूनिज्म में दुसाध-गंजू-ओराँव-मुंडा -एक 'कामरेड' वर्ग में हैं।''[6] गांव में एक के बाद एक घटनाएं होते जाने का आतंक और गहरा हो गया।

मुरहाई अंचल में सबसे पहले डाइन का पता मिलता है। मुरहाई गांव डायन के लिए प्रसिद्ध था। हर दस-पंद्रह बरस में कोई-न-कोई डायन घोषित कर दिया जाता। मानी और परसाद ने सबसे

पहले कुरुड़ा नदी के किनारे डायन को देखा। खबर पाकर गांव का पहान ने नगाड़े पर चोट की - ''इस डाइन के साँस लेने में मौत है। साँस से बादल उड़ते हैं, वे पेड़ों को फलहीन बना देते हैं, मडुआ के खेत को बाँझ कर देते हैं। यह दूसरी बात की डाइन है।''[7]

पहान इस डाइन को जलाकर मारना चाहता है। वह हनुमान मिश्र के आदेश को टालना चाहता है क्योंकि पहान हिंदू नहीं है। परंतु पहान जानता है कि अगर वह डाइन को जान से मार डालता है, तो वह बच नहीं सकता -''हनुमान मिश्र का प्रभाव और सम्मान इतना अधिक है, उनके पास इतने रुपये हैं कि पुलिस और सरकारी कर्मचारी, महाजन और जमींदार सभीउनके कदमों पर हैं, कि उनके रोकने पर डाइन को जलाकर मारने का आदिम अधिकार भूल जाना पड़ता है।''[7] इस तरह डाइन को खोजकर भगाए जाने की योजना बनाई जाती है। पहान के नेतृत्व में सभी डाइन पर पत्थर फेंककर हेसाड़ी की ओर खदेड़ देते हैं। 'डाइन' को दूर भगाकर वे उत्साह का अनुभव करते हैं। पूरी रात गाँव की पहरेदारी करते हुए महुआ और हड़िया पीकर जश्न मनाया जाता है। उन्हें लगता है कि डाइन के दूर जाते ही सारी समस्याएं शेष हो जाएंगी। सनीचरी का नाती खुशी से कहता है -''अब कुरुडा में मछली मिलेगी! ओ:, मछलियाँ छिपा रखी थी।'पानी बरसेगा, जुताई होगी।' गहरे विश्वास के साथ पहान बोला, वे बादल रोक देती है, खेत की फसल छिपा देती है, बन में शिकार का फंदा लगाने पर साही छिप जाती है।''[8] डाइन जिस ओर खदेड़ी जाती है, आतंक फैल जाता है। संशय की हवा तेज हो जाती है।

हेसाड़ी गांव में डाइन के आतंक की सनसनाहट के बीच गांव की सनीचरी जंगल की ओर औषधि की खोज में जाती है। वहाँ घायल हो जाती है। पहान के नेतृत्व में यहाँ से भी डाइन खदेड़ने के लिए सब एकजुट हो जाते हैं। डाइन पत्थरों की चोट से आहत होकर गुफा में घुस जाती है। अत: वे गुफा की द्वार पर आग जलाकर उसे बाहर निकालना चाहते हैं। धुएँ एवं आग की गर्मी से डाइन आर्तनाद कर उठती है। सहसा टुरा का पहान उसकी आवाज सुनकरहतप्रभ हो जाता है। वह आग से बचते-बचाते गुफा में प्रवेश कर जाता है -''जमीन पर एक युवती नंगी पड़ी थी। उसके पैरों की फाँक में नाल-लगा नवजात बच्चा था।''[9]

वह नंगी युवती टूरा के पहान की गूँगी लड़की सोमरी थी। हनुमान मिश्र के यहाँ उपले पाथने का काम करती थी। ठाकुर का बेटा उसका यौन-शोषण करता है। इसी कारण हनुमान मिश्र उसे अपने यहाँ से भगाकर डाइन की खबर फैला देते हैं। सच्चाई को जानकर हनुमान मिश्र के प्रति एक प्रतिहिंसा की ज्वाला जल उठती है। सभी मिलकर उसके यहाँ कामन करने का संकल्प लेते हैं -''तुमने हनुमान मिश्र से जो बातें कही थी, उन्हें वापस ले लो। हम लोग उसके कुली के काम

पर नहीं जायेंगे। किसी को नहीं जाने दूँगा। बाहर के कुली भी न लाने दूँगा।''[10] इस प्रकार सामंती सत्ता के प्रति वह बहिष्कार का मार्ग अपनाते हैं।

महाश्वेता देवी ने 'डाइन' कहानी में आदिवासी जीवन में अंधविश्वास एवं कुप्रथा के पीछे के सूक्ष्म कारणों को परखा है। उच्च वर्ग के हनुमान मिश्र जैसे लोग अशिक्षित, अनपढ़ आदिवासियों के मन में जादू-टोना और डायन का आतंक फैलाकर उनका शोषण करते हैं। विडंबना तो यह है कि आदिवासी अंचलों में कार्य करने वाली ईसाई मिशनरियों, समाज सेवी संस्थाएं एवं प्रशासन भी इस तरह के अंधविश्वासों को दूर करने की कोई पहल नहीं करते। कुरुड़ा के डाइन की घटना को अंतरराष्ट्रीयसमाचार बनाकर सूर्खियाँ बटोरी जाती हैं। पीटर एवं आइलीन भारती जैसे लोग ऐसी सूचनाओं में अपनी मनचाही कल्पना का रंग देकर धन एवं यश बटोरते हैं। डाइन के आतंक की बात ग्राम सेवी संघ, आदिवासी-कल्याण मंडल एवं पूलिस प्रशासन के भी पास गई परंतु सभी ने अपना पल्ला झाड़ लिया -''अभी तक डाइन को तलाश करने के काम में खून नहीं हुआ और होगा भी तो मैं क्या कर सकता हूँ? मैं तो सरकारी नौकर हूँ।''[11]

इस तरह के घटनाक्रम के बीच माथुर जैसे सच्चे उद्यमी शोधकर्ता अवश्य सक्रिय रहता है। वह धनी ठेकेदार का बेटा होने के बावजूद बहुत भला, मेहनती एवं उच्चाकांक्षी था। आदिवासियों के बीच करीब से देखने पर उसे लगता है आर्थिक संसार में इन लोगों का कोई स्थान नहीं है। औद्योगीकरण ने इन्हें और बेरोजगार बना दिया है -''प्रकृति ही इनका एकमात्र सहारा है। बरसात हो तो खेती हो, जंगल हरे-भरे हों, कंदमूल मिलें, नदी में मछलियाँ हों। अनावृष्टि से प्रकृति के स्तन सूख गए हैं। इसलिए यह डाइन को उसका उत्तरदायी मानकर क्रुद्ध है।''12 वह अनुभव करता है कि अशिक्षित होने के बावजूद भी इनमें सहज मानवीय संवेदना है। प्रो. रामकली सराफ का मत इस प्रसंग में विचारणीय है -''उनकी अशिक्षा और अज्ञान ने उन्हें भूत-प्रेत, अंधविश्वासों और टोने-टोटके के निकट जरूर खड़ा किया है, पर प्राकृतिक चिकित्सा, औषधियों का ज्ञान, मौसम व पर्यावरण की जो आदिमसमझ है, उनमें ही उनकी विश्वसनीयता का चरम रूप झाँकता है।''[13]

यदि इनकी पारंपरिक नैसर्गिक क्षमता को बचाए रखकर आधुनिक ढंग से बढ़ाया जाए तो इनके जीवन की अनेक समस्याएं खत्म हो जाएंगी। वे अज्ञान और सामाजिक कुप्रथाओं से उबर सरल-सहज जीवन जी सकेंगे। महाश्वेता देवी ने 'डाइन' कहानी में सीमांत पर रहने वाले उन अनपढ़ जनजातियों के जीवन संघर्ष एवं अस्तित्व संकट को यथार्थवादी ढंग से प्रस्तुत किया है। कठोर, परिश्रम करके भी 'किरा लागेगा' (भूख लगी है) और 'मालू कुलार आरगुड़ा' (पेट नहीं भरा)

जैसे प्रश्न ज्यों के त्यों बने रहते हैं। अतीतकाल से ही इन ओराँव का पेट कभी नहीं भरा क्योंकि सत्ता वर्ग चाहे जो भी हो, इन्हें पर्याप्त रूप से कभी मजूरी नहीं मिली। हनुमान मिश्र एवं गुलबदन जैसे सामंत इनका शोषण करते रहे हैं। इनकी स्त्रियों की आबरू लूट इन्हें डाइन करार दिया जाता है। अकाल एवं भूख से परेशान होकर इनका स्नायू मंडल विद्रोह कर देता है। सरकारी योजनाएं एवं रिलीफ इन तक पहुँच नहीं पाते। गरीबी के कम्यूनिज्म में वे अपने अस्तित्व को ही मुश्किल से बचा पाते हैं। महाश्वेता देवी ने आदिवासी समाज के आंतरिक कठिनाइयों को बड़ी सूक्ष्मता से निरूपण कर उन कारणों की खोज की है, जिसके कारण वे आज भी पिछड़े हुए हैं। अशिक्षा एवं अंधविश्वास के गह्वर में डूबकर इनकी स्थिति दयनीय होती जा रही है। रमणिका गुप्ता आदिवासियों के अस्तित्व परमँडराते संकट पर विचार करते हुए लिखा है -''जहाँ उनका 'सरना' नहीं है वहाँ उन पर नए-नए भगवान थोपे जा रहे हैं। उनकी संस्कृति या तो हड़पी जा रही है या मिटाई जा रही है। हर धर्म अपना-अपना भगवान उन्हें थमाने को आतुर है। हिंदूत्ववादी लोग तो उन्हें मूलधारा यानी हिंदुत्व की विकृतियों और संकीर्णताओं से जोड़ने पर तुले हैं तथा उनकी रोजी-रोटी के मुद्दे से ध्यान हटाकर उनको अलगाव की ओर धकेला जा रहा है।''[14]

आज आदिवासी समाज भीषण सांस्कृतिक संकट के दौर से गुजर रहा है। कहानी का पात्र 'माथुर' अपने शोध सामग्री के दौरान आदिवासी समाज को निकट से देखता है। उसे लगता है कि 'वह' और 'वे' एक ही अंचल के संतान होकर भी एकात्म नहीं हो सकते। उनकी स्थिति नदी की धारा की तरह समांतराल है, जिसके मिलने की संभावना नहीं है। सवर्ण हिंदू बनाम आदिवासी मिलकर एक नहीं हो सकते -''पहान और उसके मिलन का तो कोई बिंदु नहीं है। वे समांतराल हैं। मिलते नहीं। वह कैसे समझाए कि उसे रुलाई क्यों आ रही है।''[15]

लेखिका ने इस कहानी द्वारा आदिवासी जीवन के क्रूरतम सत्य को दिखाकर इस तथ्य का संकेत दिया है कि आदिवासी समाज में शिक्षा, रोजगार, चिकित्सकीय सुविधाएँ मुहैया कराकर उनकी स्थिति में सुधार करना होगा।

संदर्भ सूची

1. तुमराम डॉ. विनायक, आदिवासी कौन, राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, जी-7, जगतपुरी, दिल्ली-110051, पहला संस्करण : 2008, पृष्ठ -27

2. देवी महाश्वेता, डाइन (कहानी संग्रह, घहराती घटाएँ), राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, जी-7, जगतपुरी, दिल्ली-110051, पहला संस्करण :1998, पृष्ठ -13

3. वही, पृष्ठ -243

4. वही, पृष्ठ -244

5. वही, पृष्ठ -245

6. वही, पृष्ठ -250

7. वही, पृष्ठ -257

8. वही, पृष्ठ -262

9. वही, पृष्ठ -297

10. वही, पृष्ठ -299

11. वही, पृष्ठ -251

12. वही, पृष्ठ -293

13. सराफ प्रो. रामकली, आदिवासी साहित्यिक परंपरा : अस्तित्व व अस्मिता का संघर्ष, वाङ्मय त्रैमासिक संयुक्तांक, अप्रैल-सितंबर 2021, संपादक-डॉ. एम. फ़ीरोज अहमद, पृष्ठ -10

14. गुप्ता रमणिका, आदिवासी कौन (जरूरत है बिरसा के विस्तार की), संपादक-रमणिका गुप्ता, राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, जी-7, जगतपुरी, दिल्ली-110051, पहला संस्करण :2008, पृष्ठ -8

15. देवी महाश्वेता, डाइन (कहानी संग्रह, घहराती घटाएँ), राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, जी-7, जगतपुरी, दिल्ली-110051, पहला संस्करण :1998, पृष्ठ -299